

श्राद्ध पक्ष - 26 सितम्बर 2026 से 10 अक्टूबर 2026

भाद्रपद पूर्णिमा से आश्विन माह की अमावस्या तक की सोलह तिथियां श्राद्ध कहलाती हैं, धर्म ग्रंथों में यह मान्यता है कि एक पीढ़ी पहले के पूर्वजों अर्थात् जो भी हमसे बड़े हैं, जो भी हमारे पूर्वज हैं उनके प्रति हम श्रद्धावनत हों, उन्हें स्मरण करें और उनके प्रति कृतज्ञ बनें।

इसलिए यदि दादा-दादी, नाना-नानी, मां-बाप, बड़ा भाई या अन्य हमारे स्वजन जिनसे हमारा सम्बन्ध रहा है और उनका देहान्त हो गया है, उनका श्राद्ध करना मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य है। जिस भी तिथि को उनका देहान्त हुआ हो, श्राद्ध पक्ष की उसी तिथि को उनका श्राद्ध किया जाता है।

श्राद्ध पक्ष में प्रत्येक शिष्य-साधक को पितरेश्वर तर्पण-समर्पण अवश्य ही करना चाहिए। आपके बड़े, पारिवारिक सदस्य, स्वजन, बन्धु आदि जो पूर्णगति को प्राप्त कर चुके हैं, उन्हें श्राद्ध पक्ष में तर्पण-समर्पण द्वारा आप उनका आशीर्वाद प्राप्त कर सकते हैं। श्राद्ध पक्ष में आपके पूर्वज, बन्धु-बांधव धरती पर आकर आपसे तर्पण-समर्पण प्राप्त कर पुनः उच्चलोक की यात्रा करते हैं। उन्हें प्राप्त श्रद्धा से वे आशीर्वाद प्रदान करते हैं जो हमें शक्ति प्रदान करता है।

साधना विधान

यह साधना श्राद्ध पक्ष में किसी भी दिन प्रातः काल सम्पन्न करें। यह एक दिवसीय साधना है, और इसमें 'पितृ मुक्ति यंत्र' एवं 'प्रायण गुटिका' की आवश्यकता होती है। साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठे और सफेद धोती पहन कर दक्षिणाभिमुख हो सफेद आसन पर बैठें।

साधक को चाहिए, कि अपने सामने सफेद वस्त्र पर 'पितृ मुक्ति यंत्र' स्थापित करे, उसके चारों ओर दिव्य माला को रखें। कुंकुम से पितृ या पितरों का नाम या दिवंगत व्यक्ति का नाम यंत्र पर लिखें। दिवंगत आत्मा का नाम एक कागज पर लिखकर भी यंत्र के नीचे रख सकते हैं। अगर साधना सभी पितरों लिए कर रहें हों, तो 'सर्व पितृ' लिखें।

यंत्र और माला का पूजन करें, यंत्र पर 'प्रायण गुटिका' स्थापित करें और उसका भी पूजन करें तथा 'दिव्य माला' से निम्न मंत्र की 21 मालाएं जप करें -

।। ॐ ऐं सर्व पितृभ्यो स्वधा ।।

साधना से पूर्व संकल्प में पितृ और पितरों के नाम अवश्य लें। साधना समाप्ति के उपरान्त दक्षिण दिशा में किसी निर्जन स्थान में एक गड्ढे में यंत्र, माला एवं गुटिका को रख दें और उस पर मिट्टी डाल दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 430/-